महामहिम राज्यपाल श्री राम नरेश यादव का श्री राजीव गांधी की याद में कौमी एकता इंडिया मेरी जान संगीत संगम कार्यक्रम में उद्बबोधन

स्थान :- परेल मुम्बई, दिनांक :- 26 फरवरी,2013 समय :- रात्रि 9:00 बजे

भारतीय हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई एकता समिति मुम्बई, महाराष्ट्र द्वारा "14वां भारत रत्न यादे राजीव गांधी कौमी एकता इंडिया मेरी जान" संगीत संगम के इस कार्यक्रम में मुझे शामिल होकर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। सबसे पहले मैं समिति के पदाधिकारियों को 998 वां संगीत संगम कार्यक्रम के आयोजन के लिए बधाई और शुभकामनाएं देता हूं।

इस कार्यक्रम को देश के युवा प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री राजीव गांधी की याद से जोड़ कर एक अनुकरणीय कार्य किया है। स्वर्गीय राजीव गांधी देश की एकता और अखंता को मजबूत बनाने के लिए जीवनपर्यत्र संघर्षरत रहे। स्वर्गीय राजीव गांधी ने विश्व बंधुत्व के सिद्धांत को पूरे विश्व में फैलाने का प्रयास किया। वह सामाजिक समरसता और सौहाद्र पर जोर देते रहे। उनके सिद्धांतों से प्रेरणा लेकर आपने कौमी एकता को मजबूत बनाने के लिए यह जो संगीत संगम कार्यक्रम का आयोजन किया है वह प्रशंसनीय है।

संगीत एक ऐसा जादू है जो हमेशा हमेशा से दिलों को मिलाने का काम करता रहा है और आज देश की हिन्दू मुस्लिम एकता के लिये ऐसे संगीत संगम के सांस्कृतिक कार्यक्रम की जरूरत है। यह संगीत संगम देश की आवाम के लिए मोहब्बत का नजराना सिद्ध होगी। जिस तरह इदरिस निजामी की गजल "तुम तो ठहरे पर देसी साथ क्या निभाओगे, सुबह पहली गाड़ी से घर को लौट जाओगे" इस गजल ने देश ओर दुनिया में देश का नाम रोशन किया है उसी तरह मुझे उम्मीद है इस संगीत संगम कार्यक्रम में मौजूद शायरों, कवियों की गजल और कविता से भारत के घर-घर तक कौमी एकता के पैगाम को पहुंचाने में मददगार सिद्ध होगा।

सामाजिक सद्भाव के निर्माण के लिए ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन वर्तमान संदर्भों में एक जरूरत है। हमारी संस्कृति और सभ्यता जितनी महान है उतनी अक्षुण्ण भी है। देश की तरक्की और देशवासियों की खुशहाली के लिए हम सबको संस्कृति और सभ्यता की प्रतिष्ठा को बनाये रखना होगा।

वर्तमान समय में कुछ असामाजिक शक्तियां हमारे इसी भाईचारे और सामाजिक सद्भाव तथा आपसी प्रेम का नाजायज फायदा उठाकर देश में अशांति और भय फैलाना चाहती हैं। हम ऐसी

अलगाववादी विचारधाराओं और संकीर्ण मान्यताओं से बचना बहुत जरूरी है। हम सभी को मिलजुलकर और दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ ऐसी शक्तियों के मंसूबे विफल करने होंगे और भारत की एकता और अखण्डता को बनाये रखना होगा।

देश की आजादी की लड़ाई में कवियों, शायरों, गीतकारों, कलाकारों और साहित्यकारों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मुझे याद है, जब गली-कूचों में बच्चों और बूढ़ों की जुबान पर "सरफरोशी की तमन्ना, अब हमारे दिल में है"जैसे न जाने कितने राष्ट्र भक्ति के गीत होते थे, टोलियों में लोग निकलते थे, तो अंग्रेजों के दिल दहल जाते थे। यही नहीं, वंदे मातरम के गीत ने तो सभी लोगों में राष्ट्र-भक्ति की ऐसी ज्वाला प्रज्जवलित की कि अंतत: अंग्रेजों को देश छोड़ना ही पड़ा। आज भी गीत गाये जाते हैं, लेकिन उनमें देशभक्ति कम मनोरंजन अधिक होता है। राष्ट्रभक्ति के गीतों को बच्चे-बच्चे की जुबान पर लाने की आवश्यकता है।

दिलों को जोड़ने का सबसे अच्छा जरिया है संगीत। संगीत दो मुल्कों के लोगों को जोड़ने का सबसे सशक्त माध्यम है और यह हर सरहद से बड़ा है। हर मजहब में ईश्वर को स्वर के माध्यम से याद किया जाता है।

गीत- संगीत जड़ नहीं हो सकता है इसमें भी समय के अनुसार बदलाव होता रहता है। हिन्दी फिल्मों के गीत- संगीत में कौमी एकता के दुर्लभ उदाहरण मिलते हैं। यहां मुझे हिन्दु पृष्ठ- भूमि पर बनी फिल्म "बैजू बावरा" के एक गीत, जिसे भजन भी कह सकते हैं, की एक पंक्ति याद आ रही हैं। "मन तड़पत हरि दर्शन को आज....."। यह गीत शकील बदायूनी ने लिखा है। यह गीत ही कौमी एकता का एक अनुपम उदाहरण है। एक दूसरा उदाहरण मुस्लिम पृष्ठ भूमि पर बनी फिल्म "मुगले-आजम"का है। इस फिल्म का एक गीत है- "मौहे पनघट पर नंदलाल छेड़ गयो रे"। गीतकार और संगीतकार ने इसे रचकर कौमी एकता की एक नायाब मिसाल प्रस्तुत की है। इसके अलावा, जैसा कि आप जानते ही होंगे कि उस्ताद बिस्मिलाह खान शहनाई वादन का रियाज काशी के बाबा विश्वनाथ मंदिर से शुरू करते थे। सुर सम्राट तानसेन और उनके प्रथम गुरू मोहम्मद गौस भी कौमी एकता के उदाहरण हैं। स्वर्गीय अलाउद्दीन (खान) की सम्पूर्ण संगीत- साधना मैहर की मां शारदा के चरणों को समर्पित रही है।

यह कहा जा सकता है कि संगीत भी हमें कौमी एकता का पाठ पढ़ाता है। संगीत जैसे सहज और ग्राह्य माध्यम से कौमी एकता की भावना जाग्रत करना सबसे सरल तरीका है। साम्प्रदायिक सद्भाव की दिशा में यह आयोजन काबिल-ए-तारीफ है। ऐसे महत्वपूर्ण आयोजन में आपने मुझे शिरकत करने का मौका दिया मैं आपका शुक्रगुजार हूं। बहुत-बहुत शुक्रिया। **जय हिन्द**।